University of Patanjali

पतंजलि विश्वविद्यालय

पतंजलि विश्वविद्यालय

॥सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा॥

विवरणिका
Prospectus
2017-18

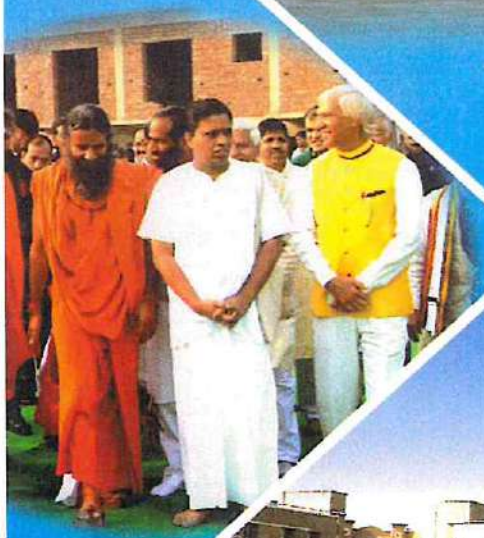

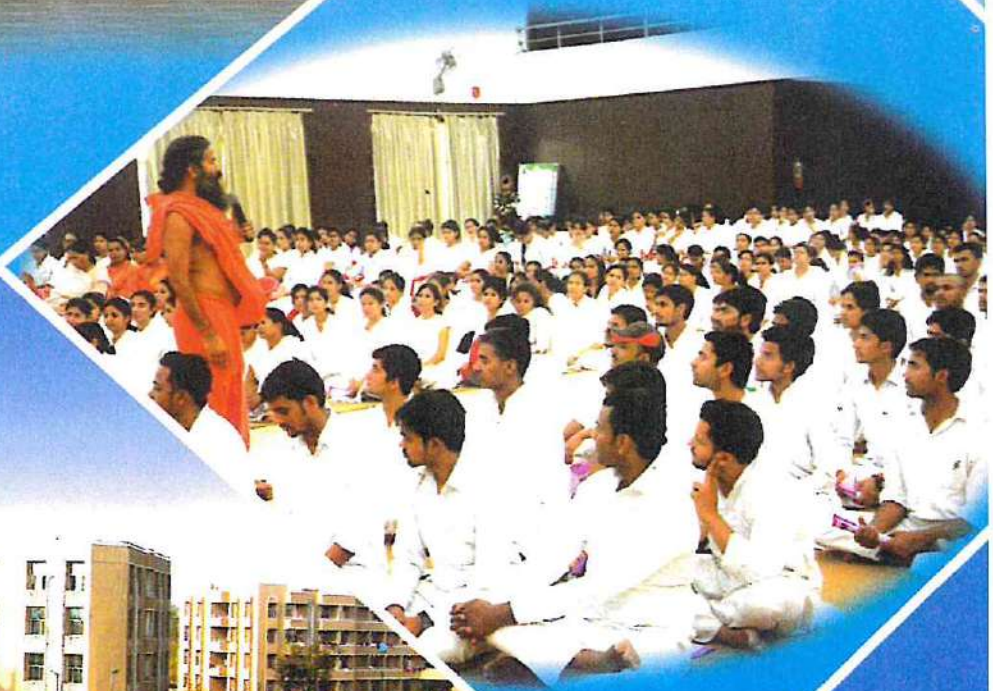

पतंजलि विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव 2016-17

पतंजलि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशालायें

पतंजलि विश्वविद्यालय में आयोजित क्रीड़ा प्रतियोगिताएं

अन्तर्विश्वविद्यालयीय योग-प्रतियोगिताएं

ओ३म्

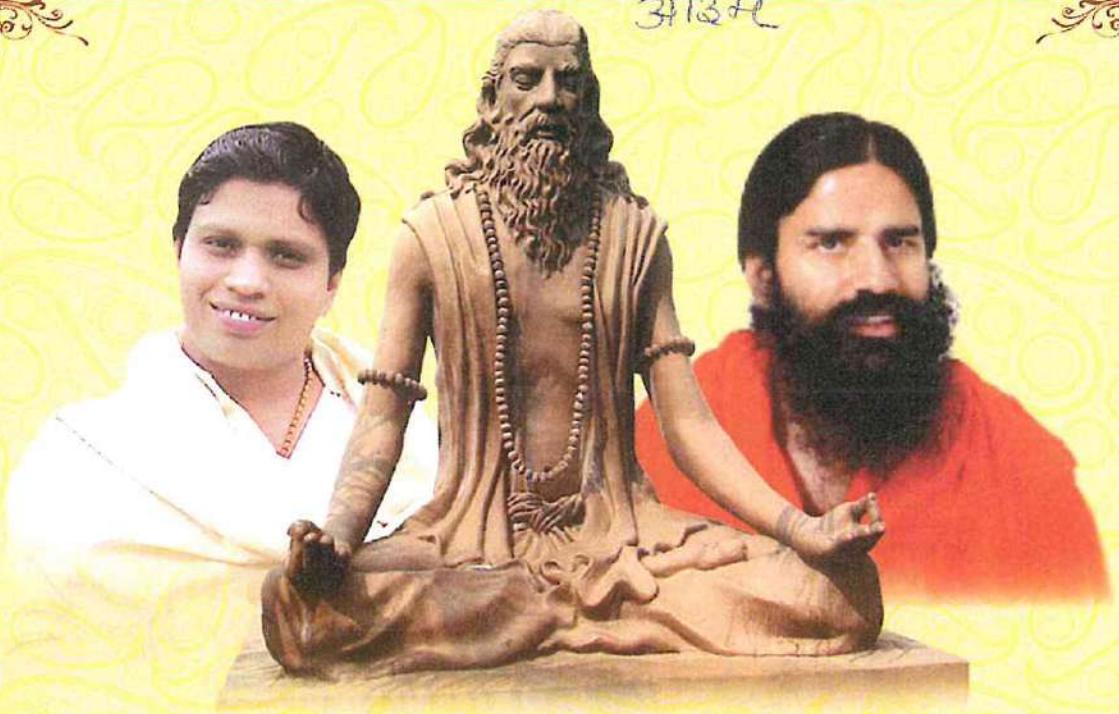

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali

शैक्षिक उत्कर्ष का समन्वित केन्द्र

An Integrated Centre for Educational Excellence

कुलाधिपति का संदेश

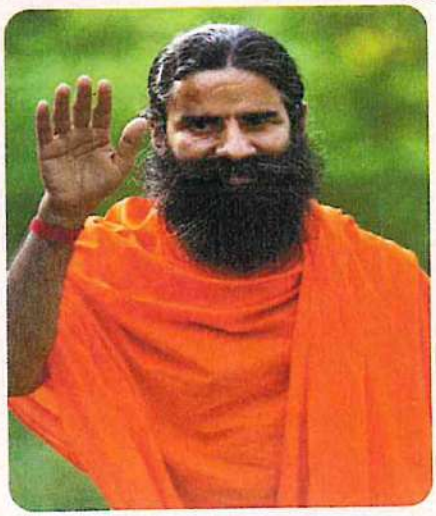

भारतवर्ष का सदियों से शिक्षा, ज्ञान, साहित्य, संगीत, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में गौरवमयी इतिहास रहा है। सम्पूर्ण विश्व से लोग आध्यात्मिक ज्ञान, शिक्षा-दीक्षा एवं प्रेरणा लेने हेतु भारतवर्ष आते रहे हैं

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ (मनु. 2/20)।

अठारहवीं शताब्दी तक भारत शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में शीर्ष पर था। भारत की विश्व बाजार में 18 प्रतिशत की साझेदारी थी तथा इसका योगदान विश्व की आय का 27 प्रतिशत था। साक्षरता का प्रतिशत 27 था तथा 7,32,000 प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के गुरुकुल थे, जैसा कि जर्मन विद्वान् मेक्स मूलर व अंग्रेजी साहित्य के विद्वान् डब्ल्यू लिटनर का मत है। यह तथ्य ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों में भी उपलब्ध है। यहाँ पर 14,000 से अधिक उच्च शिक्षा के संस्थान थे, जो 18 विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करते थे, जिसमें गणित, खगोल-विज्ञान, ज्योतिष, ब्रह्माण्ड-दर्शन, भौतिक-विज्ञान, भूविज्ञान, धातुविज्ञान, दर्शनशास्त्र, शल्यचिकित्सा, चिकित्साविज्ञान, प्रबन्धन इत्यादि विषय सम्मिलित थे। बाह्य राजनैतिक शक्तियों ने घृणित खेल खेलते हुए भारत को अपना गुलाम ही नहीं बनाया अपितु उसकी शताब्दियों से चली आ रही स्वर्णिम एवं वैभवशाली ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक विचारधारा, आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान व सामाजिक भावनाओं को भी क्षतिग्रस्त किया।

वर्तमान में भारतवर्ष में लगभग 789 विश्वविद्यालय, 38,498 महाविद्यालय और 15,16,865 प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के विद्यालय हैं, जो विज्ञान, तकनीकी व प्रबन्धन के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आज भारत में विज्ञान, तकनीकी के विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान हैं, लेकिन फिर भी वे युवाओं को संस्कारित, सामाजिक मूल्यों एवं सद्भावनाओं से ओतप्रोत करने में तथा स्वप्रबन्धन की शिक्षा देने में असफल हैं। हम यौगिक जीवनपद्धति, जीवन-प्रबन्धन, दैवीय संस्कृति, सद्वृत्त, वैदिकसंस्कार, इतिहास व अन्य स्वदेशी ज्ञान को शिक्षण, ज्ञानार्जन व शोध क्षेत्र में शामिल करना चाहते हैं।

हम आशा करते हैं कि स्वदेशी शिक्षा पद्धति से युवाओं में दिव्य संस्कारों का बीजारोपण एवं उनके अन्तर्निहित उच्च संभावनाओं का जागरण व दिव्य गुणों का विकास होगा, जिससे वे एक आदर्श, सफल एवं प्रेरक व्यक्ति बन सकेंगे। पतंजलि विश्वविद्यालय वैदिक ऋषि-परम्परा पर आधारित शिक्षा द्वारा व्यावसायिक दक्षता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सद्भावना, संवेदना आदि गुणों का विकास कर युवाओं का पथ प्रशस्त करेगा, जिससे वे यत्र-तत्र धनार्जन के स्रोतों को खोजने के स्थान पर स्वावलम्बी होकर रोजगार, स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं जीवन प्रबन्धन के क्षेत्रों में सफल हो सकेंगे।

(स्वामी रामदेव)

कुलपति का संदेश

सभ्य समाज के विवेक और संस्कार में हो रहा निरन्तर ह्रास शुभ संकेत नहीं है, इसलिए आधुनिक एवं प्राचीन ज्ञान के सर्वस्पर्शी समायोजन द्वारा हम एक शैक्षिक क्रान्ति का प्रसार करना चाहते हैं। हम युवाओं में आत्म-निर्भरता, स्व-प्रबन्धन एवं सामाजिक संवेदना के गुणों को विकसित करने के प्रति आशान्वित हैं, जिससे कि वे राष्ट्रीय उत्थान में नित्य-नवीन सामाजिक और शैक्षिक परिवर्तन कर सकें। हम 'स्वदेशी स्वास्थ्य उद्यमिता' को बढ़ावा देना चाहते हैं ताकि देश को चिकित्सा के नाम पर हो रही ठगी और अत्याचार से बचाया जा सके तथा देशवासियों को समग्र स्वास्थ्य मिल सके, क्योंकि शरीर ही धर्म का पहला साधन होता है।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। (कु. सं.)

योग और आयुर्वेद पर आधारित प्राचीन, स्वदेशी आयुर्विज्ञान सहज, सुलभ, वैज्ञानिक, समग्रतापूर्ण और दुष्प्रभावरहित है, इसलिए हम योग और आयुर्वेद को देश की मुख्यधारा की चिकित्सा पद्धति बनाना चाहते हैं, जिसके लिए पतंजलि विश्वविद्यालय दोनों विषयों के मर्मज्ञ विद्वानों को तैयार करने की योजना को क्रियान्वित कर रहा है। स्वदेशी, अध्यात्मवाद, स्वास्थ्य, शिक्षा और उद्यमिता के द्वारा एक अभिनव क्रान्ति करके नवयुग की शुरुआत करना पतंजलि विश्वविद्यालय का उद्देश्य है। हम ऐसे स्नातक तैयार करना चाहते हैं, जो योग्यतापूर्वक स्वदेशी उद्यमिता और रोजगार के साधनों को बढ़ावा देकर वर्तमान समय की नास्तिकतावादी त्रासदी, स्वास्थ्य समस्याओं और बेरोजगारी से निपट सकें। स्नातकों से अपेक्षा है कि वे परिवर्तनकारी बनकर स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारित, शान्त और समरस राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

हमारी वैदिक परम्परा परा और अपरा विद्या की शाश्वत सम्पत्ति का भण्डार है। हम पतञ्जलि विश्वविद्यालय को एक अग्रणी शिक्षण-संस्थान बनाने के लिये दृढ-संकल्पित हैं, जिसके द्वारा योग, आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति, दर्शन, मनोविज्ञान, प्रबन्धन, वेद, पर्यटन और अन्तर्विषयक शोध आदि की गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान की जा सके। योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा और अन्य स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को जोड़कर बनाये गये एक श्रेष्ठ पाठ्यक्रम का प्रारम्भ एवं पतंजलि विश्वविद्यालय में उसका मानकीकरण समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं रोजगार-सृजन के लिये एक वरदान सिद्ध होगा।

अन्त में मैं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आचार्य बालकृष्ण

(आचार्य बालकृष्ण)

प्रति-कुलपति की कलम से

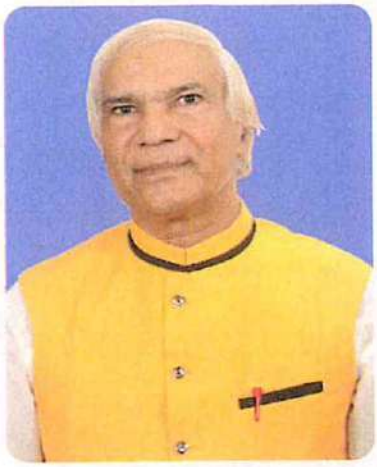

अतीन्द्रीयानसम्वेद्यान् पश्यन्त्यार्षेण चक्षुषा।
ये भावान् वचनं तेषां, नानुमानेन बाध्यते।।

परमपूज्य योगर्षि स्वामी रामदेव जी एक क्रान्तिदर्शी ऋषि परम्परा के सन्त हैं। जिस तरह जगद्गुरु शंकराचार्य ने बहुत कम उम्र में भारतवर्ष के चारों कोनों में विद्यापीठ, धर्मपीठ एवं शोधपीठों की स्थापना करके संस्कृत, संस्कृति, धर्म, वेद, दर्शन और अखण्ड राष्ट्रीयता को सुरक्षित रखने का जो महान् कार्य किया, उसी परम्परा में स्वामी जी ने आज योग, प्राच्यदर्शन, संस्कृत एवं संस्कृति को वैज्ञानिकता परक, शोध एवं समसामयिक चुनौतियों पर खरी उतरने वाली शिक्षा पद्धति के रूप में विश्व पटल पर रखने के लिए पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना की है।

पतंजलि विश्वविद्यालय में विश्वस्तरीय योग सेमिनारों की निरन्तरता और उसका शोध के क्षेत्र में नये आयाम छूना, स्वामी जी की सोच का परिणाम है। आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य श्री बालकृष्ण जी के कुलपतित्व में यह मणि-कांचन संयोग विश्व को नवीन प्रकाश देगा।

इस विराट् चेतना के साथ पतञ्जलि विश्वविद्यालय ज्ञान एवं विज्ञान की शिक्षा देने के लिए कृतसंकल्प है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सभी आधुनिक तकनीकी, प्रायौगिकी, कम्प्यूटर, शोध के साथ जोड़ना एवं युगानुरूप संचार में अग्रणी विद्यार्थी के रूप में तैयार करना हमारा उद्देश्य है। महान् शिक्षाशास्त्री हारवर्ड गार्डनर की बहुमुखी प्रतिभा-योजना को साकार करने के लिए विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के चरित्र में विशेष-गुणों का समावेश किया जायेगा। हमारे विद्यार्थी सामाजिक, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होंगे। गणित, विज्ञान एवं संगीत भी उनके चरित्र की पहचान होगी और तब वे आकर्षक व्यक्तित्व वाले स्नातक के साथ-साथ मानवीय जीवन मूल्यों के संवाहक बनकर विश्व में पतंजलि विश्वविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

स्वामी जी का किया हुआ कोई भी कार्य गुणवत्तायुक्त एवं अद्वितीय होता है। स्वामी जी ने संकल्प लिया है कि यदि भारत को विश्वगुरु बनाना है तो यह शिक्षा से ही सम्भव है ।

रामो द्विर्नाभिभाषते– यदि स्वामी जी ने कहा है तो उसे होना होगा ।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति– घटनायें आद्य ऋषियों की वाणी का अनुसरण करती हैं ।

प्रति-कुलपति के नाते मैं सभी को यह विश्वास दिलाता हूँ कि हम इस विश्वविद्यालय को शिक्षा क्षेत्र का शिरोमणि बनायेंगे।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रान्त भुवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं।।

(डॉ॰ वाचस्पति कुलवन्त)

विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारिगण

प.पू. स्वामी रामदेव जी
कुलाधिपति

श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी
कुलपति

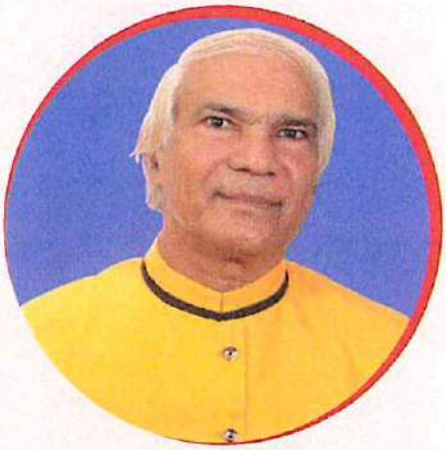

डॉ० वाचस्पति 'कुलवन्त'
प्रति-कुलपति

डॉ० जवाहर ठाकुर
कुलसचिव

श्री ललित मोहन
वित्त अधिकारी

डॉ० गोविन्द मिश्र
परीक्षा नियन्त्रक

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
पतंजलि विश्वविद्यालय एक दृष्टि में	7
पतंजलि विश्वविद्यालय के उद्देश्य	8
योग व आयुर्वेद–परक ज्ञान पर हमारी मुख्य कार्ययोजनाएं	8
पाठ्यक्रम एवं अर्हताएँ –एक दृष्टि में	10
अन्य शुल्क विवरण	12
पाठ्यक्रम विवरण	
• पी–एच.डी. पाठ्यक्रम	13
• स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	14
• स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम	16
• स्नातक पाठ्यक्रम	18
• प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम	25
• सहायक (ब्रिज) पाठ्यक्रम	25
प्रवेश प्रक्रिया	26
महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ	26
महत्त्वपूर्ण तिथियाँ	27
नियमावली	27
पतंजलि विश्वविद्यालय का स्थापन	28
पतंजलि विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताएँ	28
पतंजलि विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाएँ	29

पतंजलि विश्वविद्यालय एक दृष्टि में

पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 2006 में पतंजलि योगपीठ द्वारा की गई है। पतंजलि विश्वविद्यालय राज्य सरकार के अधिनियम संख्या 04/2006 में उत्तराखण्ड सरकार के राजपत्र दिनांक 5.4.2006 के द्वारा स्थापित किया गया है। यह विश्वविद्यालय भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के आदेश संख्या 170/XXIV/2007 के अनुसार प्रारम्भ किया गया है। भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) ने पत्र संख्या Meet/GC/340/2016- दिनांक 17 अक्टूबर, 2016 द्वारा पतंजलि विश्वविद्यालय को सदस्यता प्रदान की है। इस विश्वविद्यालय का नाम महान् भारतीय ऋषि महर्षि पतंजलि के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने मनुष्य के लिए कल्याणकारी योगसूत्रों की रचना की एवं जिसकी प्रासङ्गिकता समग्र रूप से आज भी है। पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना परम पूज्य स्वामी रामदेव जी तथा श्रद्धेय आचार्य श्री बालकृष्ण जी के द्वारा योग एवं आयुर्वेद के उत्थान हेतु इसलिए की गई है कि न केवल भारतवर्ष को अपितु सम्पूर्ण विश्व को आत्मज्ञान व पुरातन सभ्यता का बोध हो और साथ ही साथ वह शारीरिक विकृतियों और विकारों से मुक्त रह सके।

पतंजलि विश्वविद्यालय के उद्देश्य

1. प्राचीन ऋषियों-महर्षियों द्वारा उपदिष्ट मौलिक तत्त्वज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में व्यापक अध्ययन-पर बनाकर गहन शोध के लिए सुव्यवस्थित करना तथा उसे विश्व स्तर पर स्थापित करना।
2. राष्ट्रधर्म, स्वदेश प्रेम, स्वदेशी खानपान, आहार-शुचिता, आयुर्वेद एवं योग के संरक्षण तथा संवर्धन के विषय में युवाओं व जागृत करके रोजगार परक शिक्षा उपलब्ध कराना।
3. योग एवं आयुर्वेद सहित वेद-वेदाङ्ग आदि सभी प्राचीन विद्याओं का आधुनिक विधाओं पर आधारित स्नातक तथा स्नातकोत्त पाठ्यक्रम तैयार करना। इसके साथ ही कम अवधि के पाठ्यक्रम डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।
4. भारतीय संस्कृति, योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में अनुसन्धान द्वारा हुए नवीन परिवर्त्तनों को प्रोत्साहित करने के लिये शोध केन्द्र एवं विकास केन्द्र स्थापित करना तथा उनके द्वारा-ज्ञान की विविध शाखाओं में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
5. शिक्षण संस्थानों में ज्ञान के प्रचार एवं प्रसार के लिये शोध कार्य की व्यवस्था करना, जिससे विश्व पटल पर योग एवं आयुर्वे की प्राचीन उन विद्याओं एवं शोध कार्यों को स्थापित किया जा सके, जिससे छात्र/ छात्राओं को रोजगार भी सहज उपलब्ध ह सकें।
6. योग एवं आयुर्वेद के गहन अध्ययन तथा उससे सम्बद्ध ऐसी अन्य गतिविधियाँ प्रारम्भ करना, जिससे सामान्यजन को योग औ आयुर्वेद के लाभ के साथ-साथ रोगमुक्त, स्वस्थ एवं समृद्ध समाज का निर्माण हो सके और राष्ट्र की सोंच को विकसित किय जा सके।
7. युवाओं के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व का विकास करना।

योग व आयुर्वेद-परक ज्ञान पर हमारी मुख्य कार्ययोजनाएं

(क) वर्त्तमान समय में बढ़ते हुए प्रदूषण, मानसिक तनाव, अस्त-व्यस्त जीवन शैली व शारीरिक श्रम के अभाव से करोड़ देशवासी व विश्व समुदाय के लोग एक गहरे स्वास्थ्य संकट से गुजर रहे हैं। जीवन के मूलस्रोत-आहार, वायु व जल अत्यधिक विषैले हो गए हैं, जिससे कैंसर, टी.बी, दमा, एलर्जी, मोटापा, मधुमेह, हृदयरोग व उच्च रक्तचाप जैसे खतरनाव रोगों से जनसामान्य के लिए जीवन का संकट उपस्थित हो गया है। सभी प्रकार की उपचार पद्धतियाँ अभी तक आंशिक रू से ही रोगों के उपचार में सफल हो सकी हैं, अत: हम समस्त विश्व को योग एवं आयुर्वेद के माध्यम से चिकित्सा का एव सस्ता, सरल, सहज, वैज्ञानिक व प्रभावशाली विकल्प प्रदान करना चाहते हैं। योग एवं आयुर्वेद की शिक्षा पर आधारि उच्चस्तरीय पाठ्यक्रम तैयार करके ऐसी प्रतिभायें देश व विश्व समुदाय को देना, जो दुनिया को स्वास्थ्य व संस्कारों व संकट से मुक्त कर एक स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान् व सुखी विश्व का निर्माण कर सकें।

(ख) योग एवं आयुर्वेद परक प्राचीन ऋषि परम्परा से प्राप्त ज्ञान को विद्यार्थियों के शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु प्रदान करना।

(ग) योग एवं आयुर्वेद आधारित प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, डिप्लोमा पाठ्यक्रम, स्नातक पाठ्यक्रम, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम व उच्चतम आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान की सुविधायें उपलब्ध कराना।

(घ) आधुनिकतम विज्ञान की अनुसन्धान शालाओं में योग एवं आयुर्वेद को विज्ञान के आलोक में परखकर उसकी प्रामाणिकता व वैज्ञानिकता के प्रति विश्वस्त करके एक नई चिकित्सा व्यवस्था की प्रतिस्थापना करना।

(ङ) शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ही साथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय संस्थानों में रोजगार के माध्यम सृजित करना। योग एवं आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिस्थापित करने हेतु एक व्यापक कार्ययोजना व संकल्पना के लिए सतत प्रयास करना।

(च) **विश्वविद्यालय के छात्रों के भविष्य हेतु कार्ययोजनाएँ–**

विश्वस्तरीय शिक्षण व स्वास्थ्य संस्थाओं में रोजगार हेतु व्यापक स्वरूप स्थापित करना। विश्वविद्यालय की सुदृढ़ शिक्षण व्यवस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को योग एवं आयुर्वेद के विषय में पारंगत करना, जिससे कि वे स्वावलम्बी होकर योग एवं आयुर्वेद के केन्द्र व संस्थान स्थापित कर रोजगार के पुनः नवीन अवसर सृजित कर सकें।

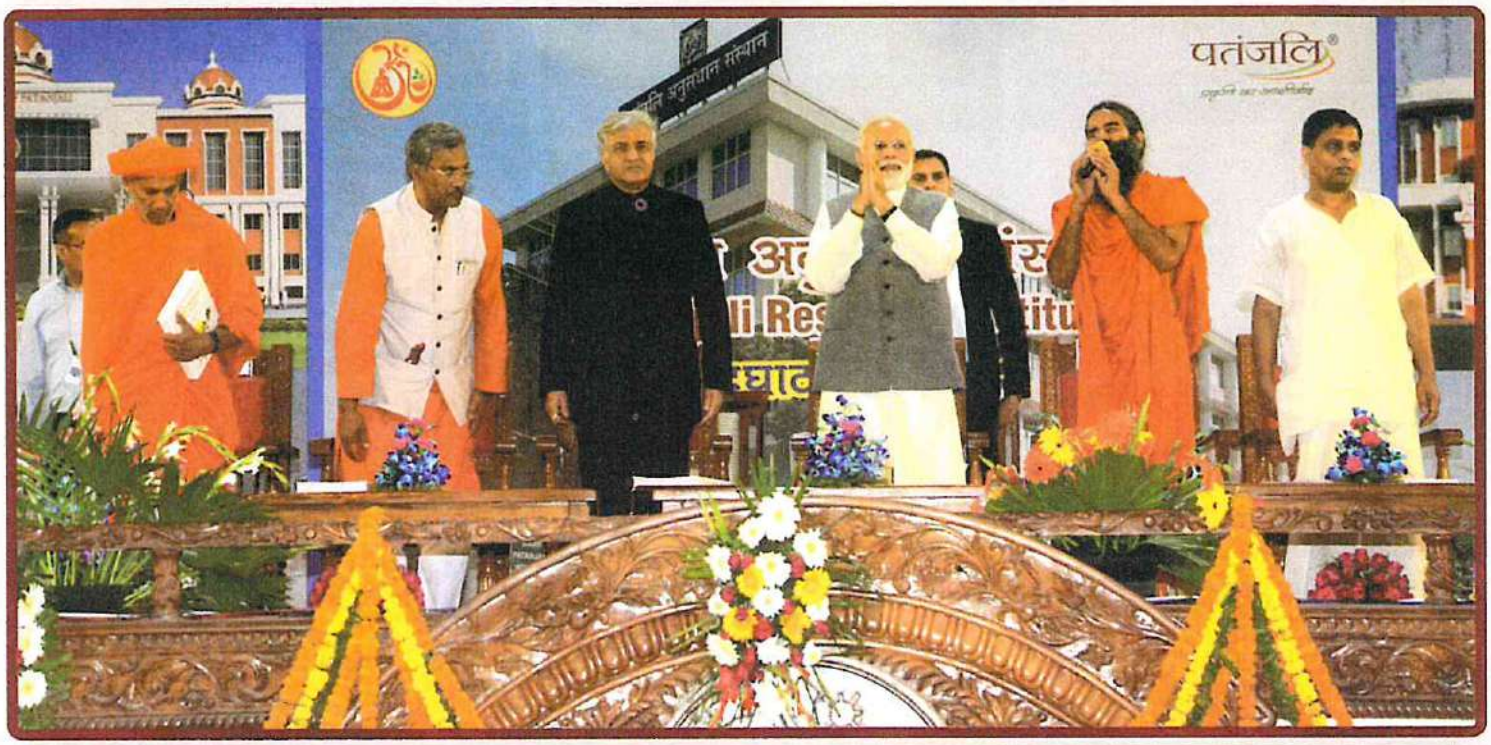

विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी,
माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड श्री के.के. पॉल एवं माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी के साथ
कुलाधिपति-स्वामी रामदेव जी, पतंजलि विश्वविद्यालय, परम पूज्य स्वामी प्रद्युम्न महाराज जी एवं कुलपति-श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को "राष्ट्रऋषि सम्मान"
प्रदान करते हुए कुलाधिपति एवं कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, कुलाधिपति एवं कुलपति,
पतंजलि विश्वविद्यालय भविष्य की संभावनाओं पर विचार-विमर्श करते हुए

पाठ्यक्रम एवं अर्हताएं-एक दृष्टि में

पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	कुल सीट	शैक्षणिक प्रवेश अर्हता	अधिकतम आयु सीमा	सत्र शिक्षण शुल्क
पी-एच.डी.						
PHDY	योग विज्ञान	3-5 वर्ष	50	किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर में कम से कम 55% के साथ उत्तीर्ण (अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/पिछड़ा वर्ग हेतु 5% प्रवेश छूट मान्य होगी)		रजिस्ट्रेशन शुल्क 5,000/- पाठ्यक्रम शुल्क 50,000/- शोध-प्रबन्ध 20,000/- मासिक शुल्क 1,000/- (प्रत्येक तीन माह के प्रगति-पत्र के साथ)
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम						
MAYS/MSYS	एम.ए./ एम.एस-सी. योग विज्ञान	2 वर्ष	40	स्नातक	30 वर्ष	12,500/-
MAPSY	एम.ए. मनोविज्ञान	2 वर्ष	10	स्नातक		
MAPH	एम.ए. दर्शनशास्त्र	2 वर्ष	40	स्नातक		
MTTM	एम.ए. / यात्रा एवं पर्यटन प्रबन्धन	2 वर्ष	40	स्नातक		
MAENG	एम. ए. अंग्रेजी	2 वर्ष	40	स्नातक (सम्बन्धित विषय में)		
MASS	एम.ए. संस्कृत (साहित्य)	2 वर्ष	40	स्नातक (सम्बन्धित विषय में)		
MASV	एम.ए. संस्कृत (व्याकरण)	2 वर्ष	40	स्नातक (सम्बन्धित विषय में)		
MASPH	एम.ए. संस्कृत (दर्शन)	2 वर्ष	40	स्नातक (सम्बन्धित विषय में)		
ACH	आचार्य	2 वर्ष	40	स्नातक (सम्बन्धित विषय में)		
स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम						
PGDYS	योग विज्ञान	1 वर्ष	40	स्नातक	35 वर्ष	15,000/-
PGDYHCT	योग स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन	1 वर्ष	40	स्नातक		15,000/-
PGDHM	हिन्दुस्तानी संगीत	1 वर्ष	40	स्नातक		10,000/-
PGDPK	पंचकर्म	1 वर्ष	40	बी.ए.एम.एस.		25,000/-

पाठ्यक्रम एवं अर्हताएं-एक दृष्टि में

पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	कुल सीट	शैक्षणिक प्रवेश अर्हता	अधिकतम आयु सीमा	सत्र शिक्षण शुल्क
स्नातक पाठ्यक्रम						
BAYS	बी.ए. (योग विज्ञान के साथ)	3 वर्ष	50	इन्टरमीडिएट	25 वर्ष	10,000/-
BSYS	बी.एस-सी. योग विज्ञान	3 वर्ष	50			12,500/-
BD	शास्त्री / ऑनर्स बी.ए. दर्शन	3 वर्ष	50			10,000/-
BV	शास्त्री / बी.ए. व्याकरण	3 वर्ष	50			10,000/-
BASS	बी.ए. संस्कृत (वैदिक एवं लौकिक साहित्य)	3 वर्ष	50			10,000/-
BASV	बी.ए. संस्कृत (व्याकरण)	3 वर्ष	50			10,000/-
SHT	शास्त्री	3 वर्ष	50			10,000/-
प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम						
CCYT	योग चिकित्सा	6 माह	50	इन्टरमीडिएट	25 वर्ष	20,000/-
CCHM	हिन्दुस्तानी संगीत	6 माह	50		30 वर्ष	8,000/-
एक वर्षीय सहायक पाठ्यक्रम						
BC	संस्कृत	1 वर्ष	50	इन्टरमीडिएट	25 वर्ष	15,000/-

नोट

1. किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 50% अंकों के साथ 10+2+3 उत्तीर्ण अभ्यर्थी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम / स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम / प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के लिए अर्ह होंगे।
2. किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.ए.एम.एस. न्यूनतम 60% अंकों के साथ उत्तीर्ण अभ्यर्थी पंचकर्म पाठ्यक्रम हेतु अर्ह होंगे।
3. किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा परिषद् से 10+2 अथवा समकक्ष न्यूनतम 60% अंकों के साथ उत्तीर्ण अभ्यर्थी स्नातक पाठ्यक्रम / सहायक-पाठ्यक्रम के लिए अर्ह होंगे।
4. आयु सीमा के निर्धारण हेतु मान्य अन्तिम तिथि 31 जुलाई 2017 होगी।

अन्य शुल्क विवरण

1. **आवासीय शुल्क** – 1,500/- रुपये प्रति माह
2. **भोजन शुल्क** – 2,500/- रुपये प्रति माह
3. **परीक्षा शुल्क** – 1,000/- रुपये प्रति सत्र
4. **क्रीड़ा शुल्क** – 1,000/- रुपये प्रवेश के समय वार्षिक
5. **निर्धारित गणवेश** – 3,500/- रुपये प्रवेश के समय एकमुश्त (दो जोड़ी कुर्ता-पायजामा/सलवार-कुर्ता रुपये 1,500/- + ट्रैक-सूट = रुपये 1,000/- + ब्लेज़र = रुपये 1,000/-
6. **षट्कर्म सामग्री** – 500/- रुपये प्रवेश के समय एकमुश्त
7. **सुरक्षा धनराशि** – 2,000/- रुपये एकमुश्त

नोट :-

1. **प्रवेश के समय** – छात्रावास शुल्क + भोजन शुल्क अग्रिम तीन माह हेतु + प्रथम-सत्र का शिक्षण शुल्क + परीक्षा शुल्क + क्रीड़ा शुल्क+निर्धारित गणवेश शुल्क + षट्कर्म सामग्री शुल्क + एकमुश्त सुरक्षा धनराशि।
2. **नवम्बर माह का प्रथम सप्ताह** – छात्रावास शुल्क + भोजन शुल्क अग्रिम दो माह हेतु + परीक्षा शुल्क।
3. **जनवरी माह का प्रथम-द्वितीय सप्ताह** – छात्रावास शुल्क + भोजन शुल्क अग्रिम तीन माह हेतु + तृतीय सत्र का शिक्षण शुल्क।
4. **अप्रैल माह का प्रथम सप्ताह** – छात्रावास शुल्क + भोजन शुल्क अग्रिम दो माह हेतु + परीक्षा शुल्क।

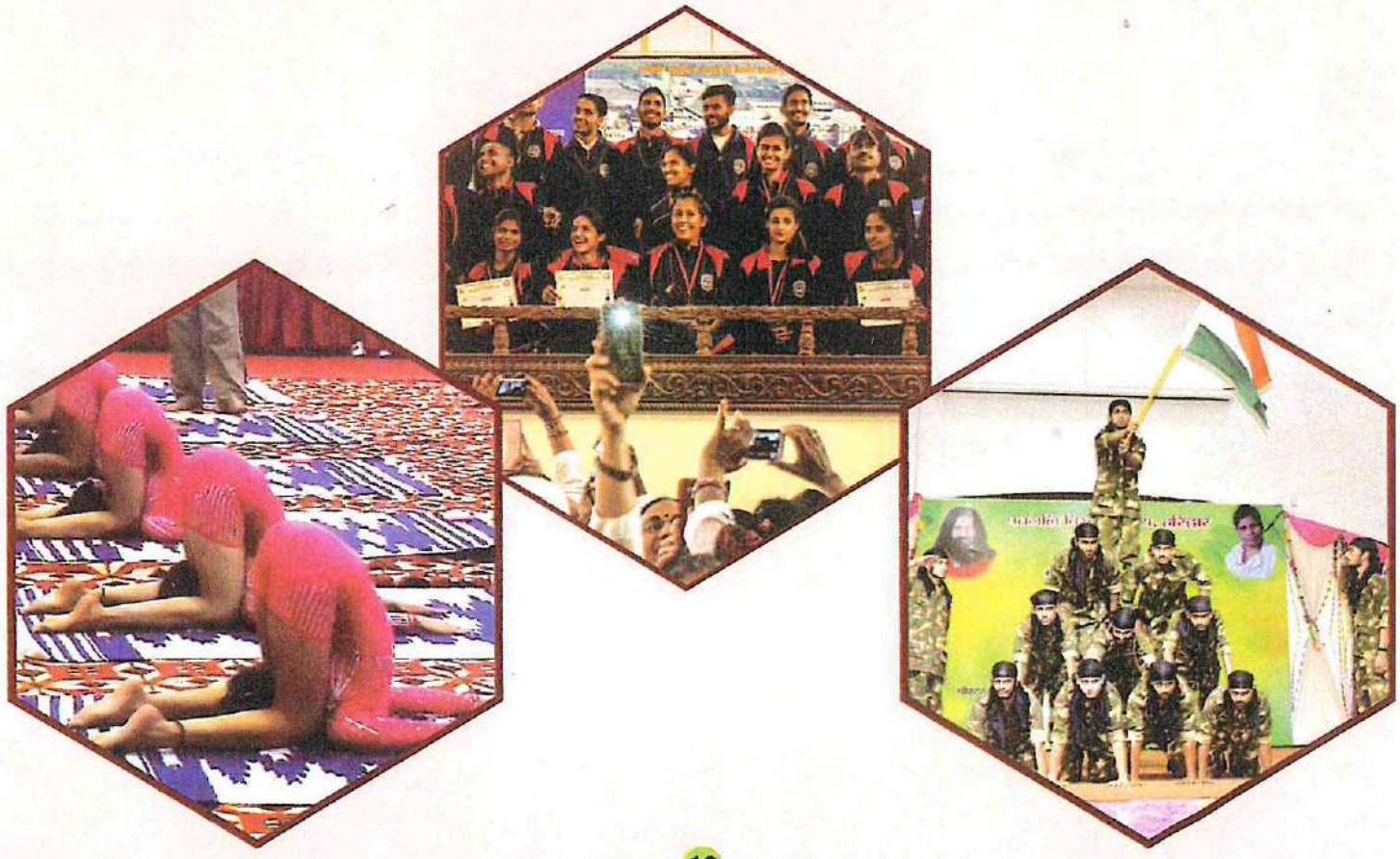

पेपर कोड	सत्र	शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आन्तरिक मूल्यांकन के अंक
डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी				
PHD		पाठ्यक्रम कार्य (कोर्स वर्क)-6 माह		
		प्रथम प्रश्न पत्र– अनुसन्धान विधियाँ एवं सांख्यिकी	80	20
		द्वितीय प्रश्न पत्र– कम्प्यूटर अनुप्रयोग	80	20
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम				
एम.ए./एम.एस-सी. (योग विज्ञान), 2 वर्ष				
MA/MS-101	प्रथम	योग के मूल सिद्धान्त	75	25
MA/MS-102		हठयोग	75	25
MA/MS-103		श्रीमद्भगवद्गीता एवं सांख्यकारिका	75	25
MA/MS-104		मानव शरीर विज्ञान-I	75	25
MA/MS-105		क्रियात्मक-योग	75	25
MA/MS-106		क्रियात्मक-मानव शरीर विज्ञान-I	75	25
MA/MS-201	द्वितीय	पातंजल योग दर्शन	75	25
MA/MS-202		भारतीय दर्शन एवं संस्कृति	75	25
MA/MS-203		योग मनोविज्ञान	75	25
MA/MS-204		मानव शरीर विज्ञान-II	75	25
MA/MS-205		क्रियात्मक-योग	75	25
MA/MS-206		क्रियात्मक-मानव शरीर विज्ञान-II	75	25
MA/MS-301	तृतीय	योग शिक्षण की पद्धति व शिक्षण महत्त्व	75	25
MA/MS-302		जैव यान्त्रिकी व पेशीगतिविज्ञान (किनिसीऑलजी)	75	25
MA/MS-303		अनुसन्धान व सांख्यिकीय विधियाँ	75	25
MA/MS-304		रोग विशिष्ट विकृति विज्ञान	75	25
MA/MS-305		क्रियात्मक-योग	75	25
MA/MS-306		क्रियात्मक-जैव यान्त्रिकी व पेशीगति विज्ञान	35	15
MA/MS-307		क्रियात्मक-मानव रोग विशिष्ट विकृतिविज्ञान	35	15

पेपर कोड	सत्र	शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आन्तरिक मूल्यांकन के अंक
MA/MS-401	चतुर्थ	आरोग्यशास्त्र भोजन व पोषण	75	25
MA/MS-402		यौगिक चिकित्सा	75	25
MA/MS-403		पूरक व वैकल्पिक चिकित्सा	75	25
MA/MS-404		लघु शोध-पत्र/कार्यक्षेत्र प्रशिक्षण	70	30
MA/MS-405		क्रियात्मक-योग	75	25
MA/MS-406		क्रियात्मक-पूरक व वैकल्पिक चिकित्सा	75	25

एम.ए. (मनोविज्ञान), 2 वर्ष

MAP-101	प्रथम	योग मनोविज्ञान	75	25
MAP-102		प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	75	25
MAP-103		व्यक्तित्व का मनोविज्ञान	75	25
MAP-104		उन्नत मनोविज्ञान	75	25
MAP-105		क्रियात्मक-मनोविज्ञान	75	25
MAP-201	द्वितीय	मनोविज्ञान की सांख्यिकीय तकनीक	75	25
MAP-202		सञ्ज्ञानात्मक मनोविज्ञान	75	25
MAP-203		परामर्श मनोविज्ञान	75	25
MAP-204		व्यावहारिक मनोविज्ञान	75	25
MAP-205		क्रियात्मक-मनोविज्ञान	75	25
MAP-301	तृतीय	व्यावहारिक मनोमितीय	75	25
MAP-302		अनुसन्धान क्रियाविधि	75	25
MAP-303		स्वास्थ्य मनोविज्ञान	75	25
MAP-304		मनो-नैदानिक तकनीक	75	25
MAP-305		क्रियात्मक-मनोविज्ञान	75	25
MAP-401	चतुर्थ	मनोवैज्ञानिक परीक्षण	35	15
MAP-402		रोग-विषयक अवरोध	35	15
MAP-403		चिकित्सकीय तकनीक	35	15
MAP-404		लघु शोध-पत्र	75	25
MAP-405		क्रियात्मक-मनोविज्ञान	75	25

एम.ए. (दर्शन), 2 वर्ष

पेपर कोड	सत्र	शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आन्तरिक मूल्यांकन के अंक
MD-101	प्रथम	वैदिकदर्शन व सांख्ययोग -1	75	25
MD-102		न्यायदर्शन व वैशेषिकदर्शन-1,	75	25
MD-103		वेदान्तदर्शन व मीमांसादर्शन-1	75	25
MD-104		अनार्ष दर्शन-I • चार्वाक-दर्शन • बौद्ध-दर्शन • जैन-दर्शन	75	25
MD-201	द्वितीय	सांख्यदर्शन व योगदर्शन-2,	75	25
MD-202		न्यायदर्शन व वैशेषिकदर्शन-2,	75	25
MD-203		वेदान्तदर्शन व मीमांसा, न्यायदर्शन-2,	75	25
MD-204		पाश्चात्त्य दर्शन का इतिहास व भारतीय दर्शन का इतिहास	75	25
MD-301	तृतीय	सांख्यदर्शन व योगदर्शन-3,	75	25
MD-302		न्यायदर्शन व वैशेषिकदर्शन-3,	75	25
MD-303		वेदान्तदर्शन व मीमांसा, न्यायदर्शन-3,	75	25
MD-304		अनार्ष दर्शन-II • पाणिनीय दर्शन, • माध्वदर्शन (द्वैतदर्शन) • प्रत्यभिज्ञा दर्शन • प्राचीन भारतीय दर्शन का इतिहास	75	25
MD-401	चतुर्थ	सांख्यदर्शन व योगदर्शन - 4,	75	25
MD-402		न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन - 4,	75	25
MD-403		वेदान्तदर्शन व मीमांसादर्शन	75	25
MD-404		अनार्ष दर्शन -III • रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतदर्शन व शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन	75	25

एम.ए. (यात्रा एवं पर्यटन प्रबन्धन) 2 वर्ष

पेपर कोड	सत्र	शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आन्तरिक मूल्यांक के अंक
MTTM-101	प्रथम	पर्यटन अवधारणा एवं सिद्धान्त	75	25
MTTM-102		उत्तराखण्ड पर्यटन	75	25
MTTM-103		योग स्वास्थ्य एवं पर्यटन	75	25
MTTM-104		साहसिक पर्यटन	75	25
MTTM-105		मौखिक परीक्षा	100	00
MTTM-201	द्वितीय	ट्रेवल एजेन्सी एवं टूर ऑपरेशन	75	25
MTTM-202		भारत में पर्यटन संसाधन	75	25
MTTM-203		परिवहन प्रबन्धन	75	25
MTTM-204		पर्यटन में संगणक सम्प्रयोग	75	25
MTTM-205		टूर रिपोर्ट मौखिक परीक्षा	100	00
MTTM-301	तृतीय	संस्कृति, विरासत एवं पर्यटन	75	25
MTTM-302		हवाई जहाज टिकटिंग	75	25
MTTM-303		होटल एवं रिसोर्ट प्रबन्धन	75	25
MTTM-304		शोध प्रविधि	75	25
MTTM-305		परियोजना विवरण/रिपोर्ट	100	00
MTTM-401	चतुर्थ	विश्व के गन्तव्य स्थल	75	25
MTTM-402		टूर पैकेजिंग प्रबन्धन	75	25
MTTM-403		पर्यटन विपणन	75	25
MTTM-404		पर्यटन नीति एवं योजना	75	25
MTTM-405		संस्थागत प्रशिक्षण	100	00

स्नातकोत्तर डिप्लोमा (योग विज्ञान), 1 वर्ष

YS-101	प्रथम	योग परिचय एवं योग के मूल सिद्धान्त	75	25
YS-102		हठयोग	75	25
YS-103		श्रीमद्भगवद्गीता तथा सांख्यकारिका	75	25
YS-104		शरीर क्रियाविज्ञान	75	25
YS-105		क्रियात्मक–योग	75	25
YS-106		क्रियात्मक–शरीरविज्ञान	75	25